# कहानी एन फ्रैंक की

लेखनः ब्रैंडा राल्फ लुईस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

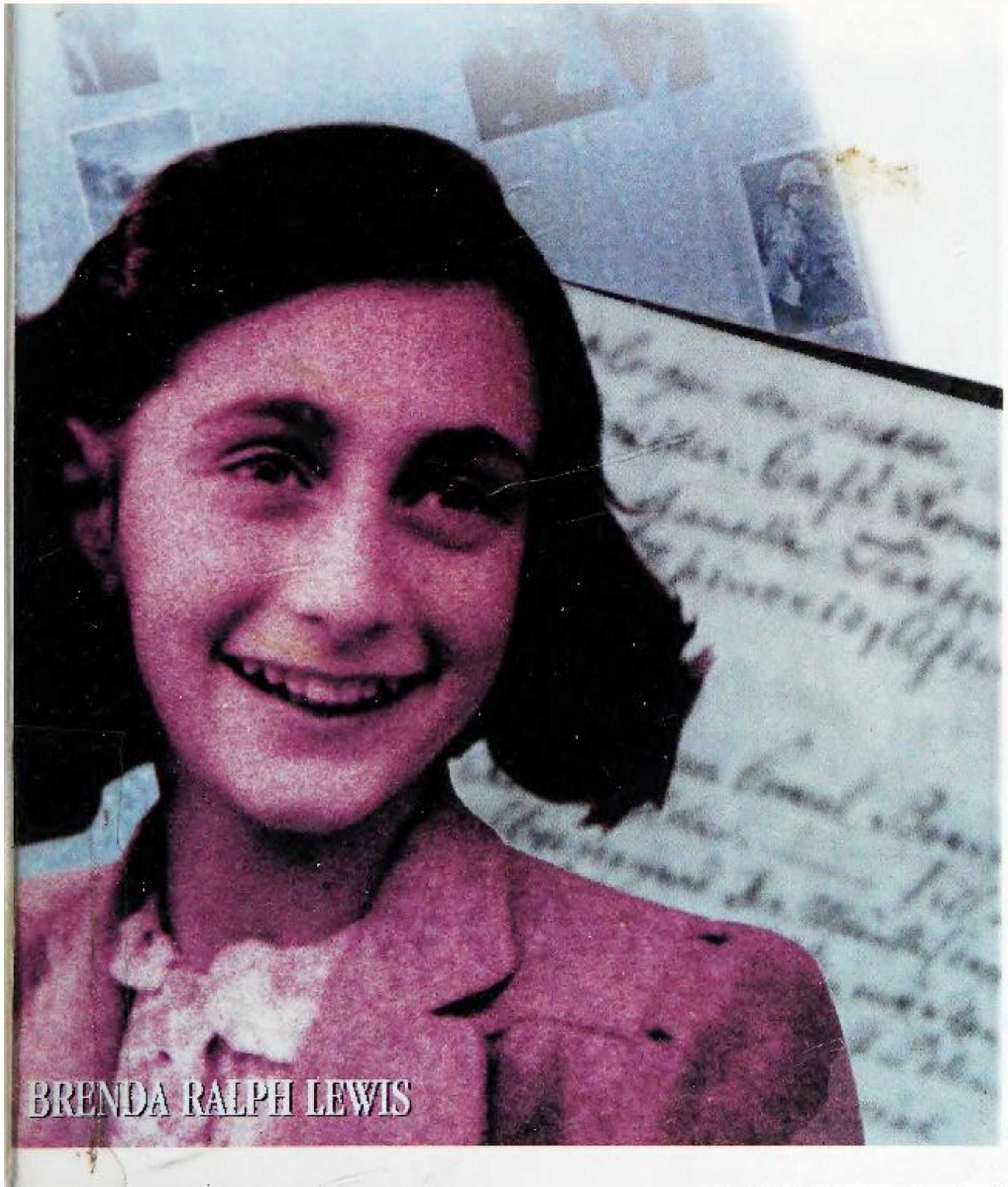

## अनुक्रम

1. एन व उसकी डायरी
2. आरंभिक वर्ष
3. ख़तरों भरा समय
4. ख़ुफ़िया उप-भवन
5. छिप कर बिताया जीवन
6. नात्ज़ियों ने धर-पकड़ा
7. कहना एन की कहानी को

# कहानी एन फ्रैंक की

लेखनः ब्रैंडा राल्फ लुईस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

# एन व उसकी डायरी

*एन फ्रैंक*
*उम्र 12 वर्ष*
*मई, 1942*

गर्मियों का गुनगुना दिन था, पर ज़ोरदार बारिश हो रही थी जो एमस्टरडाम की सड़कों को भिगा रही थी। खासी गरमी के बावजूद 13 साल की एन फ्रैंक और उसके माता-पिता कपड़ों की कई तहें पहन घर से निकले थे। एन एक झोला लटकाए थी, जिसमें उसने हड़बड़ी में एकट्ठा की चीज़ें रखीं थीं? इनमें उसकी बेशकीमती डायरी भी थी।

एन ने इस डायरी में वह सब दर्ज किया था जो इस दिन के पहले तक घटा था।

*एन फ्रैंक की बेशकीमती डायरी।*

तारीख़ थी 6 जुलाई 1942, जिस दिन एन का परिवार छिपने पर मजबूर हुआ। वे इसलिए छिपने जा रहे थे क्योंकि वे यहूदी थे और यहूदियों पर जर्मनी के नात्ज़ी शासक कहर ढा रहे थे। अब चूंकि नात्ज़ी नेदरलैण्डस् पर भी काबिज़ हो गए थे, फ्रैंक परिवार खतरे में था।

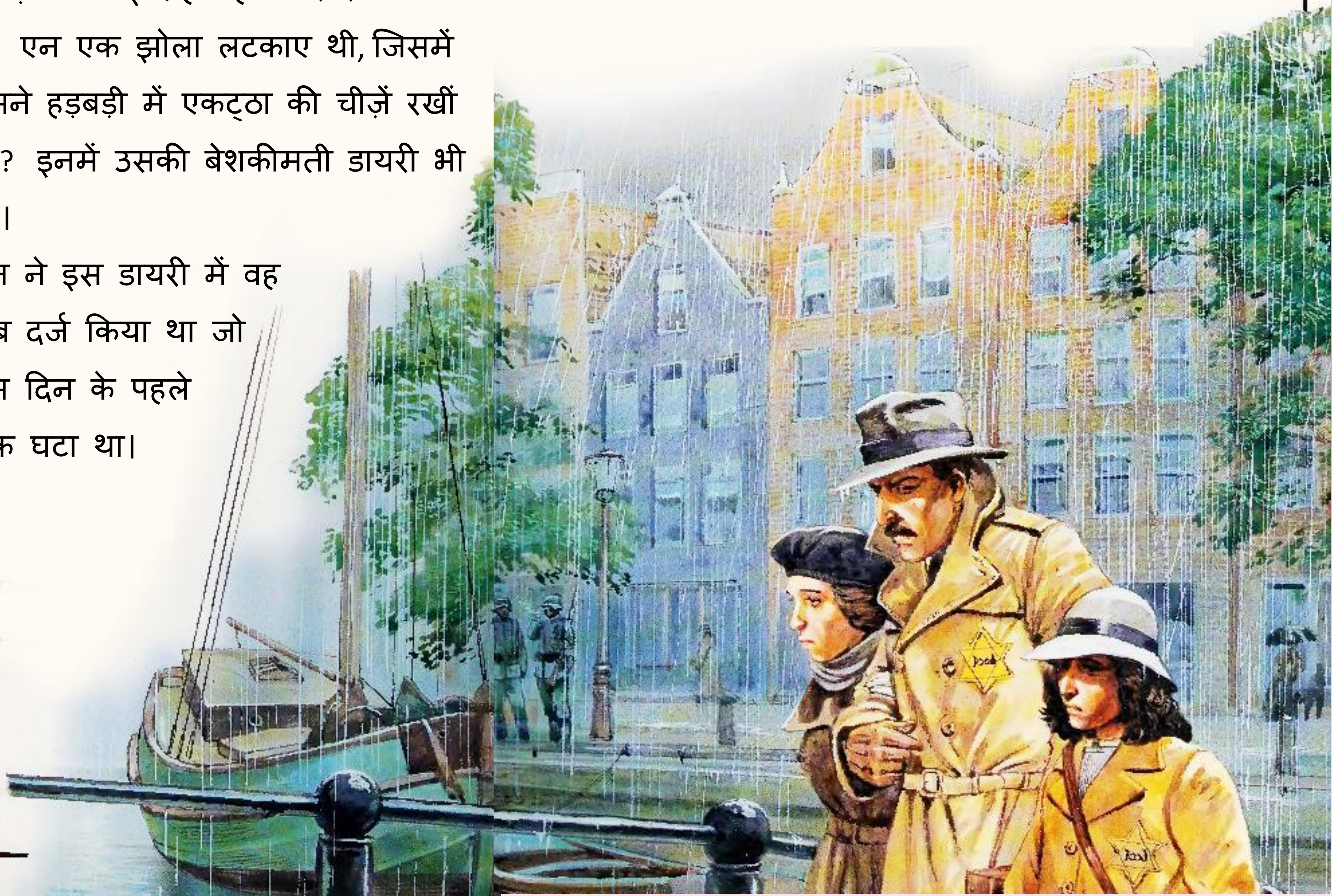

फ्रैंक परिवार को डर था कि छिपने की जगह तक की लम्बी दूरी पार करने के दौरान कोई उन्हें देख लेगा। उन्हे पता था कि नात्ज़ी, यहूदियों को घेर-घार कर यातना शिविरों में भेज देते थे, और तब वे यहूदी लापता ही हो जाते थे।

फ्रैंक परिवार की छिपने की जगह एक गोदाम के पीछे बने उप-भवन में थी, जहाँ एन के पिता का पहले दफ्तर था। उप-भवन में घुसने का एक ख़ुफ़िया दरवाज़ा था और उसमें कई कमरे थे जिनकी खिड़कियों पर काले कागज़ चिपकाए गए थे। बाहर से किसी को यह पता नहीं चल सकता था कि वहाँ कोई रहता भी है।

*छिपने की जगह इस इमारत में थी।*

उप-भवन की सीढ़ियाँ चढ़ एन एक विचित्र नया जीवन शुरू करने वाली थी।

अगले दो वर्षों तक एन को बाहर निकलने की इजाज़त नहीं रही, साथ ही उसे लगभग पूरे दिन चुप भी रहना पड़ता था। एन ने अपने इस विचित्र जीवन को अपनी डायरी में दर्ज किया। पर वह सब जानने के पहले हमें बिलकुल शुरुआत तक जाना होगा।

# आरंभिक वर्ष

फ्रैंकफर्ट के मारबाख़वेग में एन का पहला घर।

एन फ्रैंक का जन्म 12 जून 1929 में जर्मनी के फ्रैंकफर्ट शहर में हुआ था। उसका पूरा नाम एनालीसे था, और उसकी एक बहन थी जिसका नाम मार्गो था

मार्गो एन से तीन साल बड़ी थी - वह सौम्य और शर्मीली लड़की थी जिससे सब प्यार करते थे। एन ऊर्जा से भरपूर थी और हमेशा सवाल करती रहती थी। उसकी मौज-मस्ती सबको आकर्षित करती थी, खास तौर से उसके पिता ऑटो को।

ऑटो एक बैंक के लिए काम करते थे और अपनी पत्नी एडिथ और नन्ही बेटियों के साथ ग्रामीण इलाके के पास बने एक आरमदेह अपार्टमेंट में रहते थे।

चार साल की होने तक एन ने एक सुखद बचपन जिया जिसमें तमाम अच्छी चीज़ें थीं। पर तब जर्मनी में घटी वारदातों ने परिवार की ज़िन्दगी ही बदल डाली।

ऑटो फ्रैंक
एन के पिता

एडिथ फ्रैंक
एन की माँ

मार्गो व
एन फ्रैंक

एडॉल्फ हिटलर जर्मनी की नात्ज़ी पार्टी का फ्युहरर (नेता) था। 30 जनवरी को वह जर्मनी का शासक बना। वह यहूदियों को जर्मनी की सभी समस्याओं का ज़िम्मेदार मानता था। उसने यहूदियों का जीना हराम करना शुरू कर दिया।

यहूदियों के घर, उनकी नौकरियाँ छिनने लगीं। जर्मनी के बाशिन्दों से कहा जाने लगा कि वे यहूदियों से कोई वास्ता न रखें। फ्रैंक परिवार अपना मुहल्ला छोड़ वहाँ जा बसा जहाँ लोग अब भी दोस्ताना थे। पर दिन ब दिन हालात बदतर होते जा रहे थे।

**एडॉल्फ हिटलर**

एडॉल्फ हिटलर एक तानाशाह था। मतलब कि जर्मनी पर उसका पूरा नियंत्रण था। उसके भाषणों को सुनने नात्ज़ी अनुयायियों की भीड़ उमड़ा करती थी।

यहूदियों की दुकानों की खिड़कियों पर उनके बारे में भद्दे नारे लिखे नज़र आने लगे और सड़कों पर उन्हें दी गई सज़ाओं और उनकी मार-पिटाई के किस्से सुनाई देने लगे।

ऑटो फ्रैंक ने तय किया कि वे अपने परिवार को नैदरलैण्डस् के एमस्टरडाम शहर ले जाएंगे। उनका मानना था कि उनका परिवार डच लोगों के बीच महफ़ूज़ रहेगा। और वे सचमें सुरक्षित रहे भी - कुछ समय तक।

*स्कूटी के पास खड़ी एन अपनी सहेली सान्ने के साथ खेलते हुए।*

एन का नया घर एमस्टरडाम के मरवेडेप्लेन का एक अपार्टमेंट था। उसने जल्द ही वहाँ नए दोस्त बना लिए। उनमें कुछ यहूदी बच्चे भी थे जिनके परिवार भी जर्मनी से भागे थे।

एन और उसकी सहेलियों को चैड़े फुटपाथ पर पहल-दूज खेलना, अपनी साइकिलों और स्कूटरों पर रेस लगाना पसन्द था। फ्रैंक परिवार के अपार्टमेंट के बाहर बने खेल मैदान में वे छिपम-छिपाई खेला करती थीं। सर्दियों में एन को बर्फ पर स्केटिंग करना अच्छा लगता था।

एन एक खुशमिज़ाज और लोकप्रिय लड़की थी जिसे लोगों को हंसाना पसन्द था।

कभी-कभार वह स्कूल में बहुत बोलने के कारण परेशानी में भी फंस जाती थी। उसकी एक शिक्षिका ने उसे 'बातून कुमारी' का उपनाम भी दिया था।

पर जब एन दस साल की हुई उसकी ज़िन्दगी फिर से उलट-पलट हो गई।

*एमस्टरडाम के स्कूल में एन।*

# खतरों भरा समय

जर्मन अब काफ़ी पास आ चुके थे, सीमा के उस पार। अप्रेल 1940 में उन्होंने नॉर्वे और डैनमार्क पर कब्ज़ा कर लिया। तब 10 मई को जर्मन सेना ने लक्समबर्ग, बैल्जियम और नैदरलैण्डस् पर हमला शुरू किया।

वह शुक्रवार का दिन था, पर सारी दुकानें बन्द थीं। एन स्कूल नहीं गई थी। हर चन्द मिनटों में हवाई हमले की चेतावनी देने वाले साइरन की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

**जर्मनी का हमला**

द्वितीय विश्वयुद्ध 3 सितम्बर 1939 को तब शुरू हुआ जब जर्मनी ने पोलैण्ड पर हमला किया। 1940 तक हिटलर ने युरोप के काफ़ी हिस्सों को जीत लिया था।

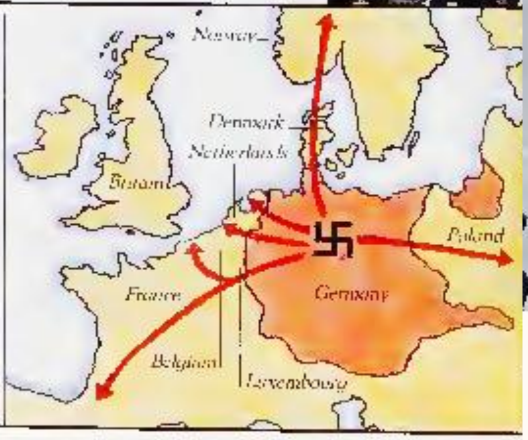


चार दिन की मुठभेड़ के बाद नीदरलैण्डस् ने हथियार डाल दिए। डच लोग और नात्ज़ी अत्याचारों से जर्मनी से भाग कर आए यहूदी अब नात्ज़ी शासन के अधीन थे। यहूदियों ने इंग्लैण्ड भागने की कोशिश की, पर जर्मन सेना ने बन्दरगाहों को बन्द कर दिया।

*नात्ज़ी सैनिकों से भरे ट्रक एमस्टरडाम की सड़कों पर।*

नात्ज़ियों के कब्ज़े के बाद भी पहले-पहल ज़िन्दगी सामान्य तरीके से चली। दुकानें फिर से खुलीं। सबके पास खाने-पीने का सामान था। एन और मार्गो फिर से स्कूल जाने लगीं, और उनके पिता भी काम पर लौटे।

ऑटो फ्रैंक अपना धंधा प्रिंसेनखाख़्ट स्ट्रीट पर बनी एक इमारत में ले गए। एन और उसकी सहेलियाँ वहाँ अक्सर टेलिफोनों और टाइपराइटरों से खेलतीं और एक-दूसरे को नीचे सड़क पर चलते लोगों पर पानी छिड़कने की चुनौती देतीं।

एन को फिल्में पसन्द थीं, वह मशहूर फिल्मी अदाकारों के चित्र इकट्ठा किया करती थी।

पर धीरे-धीरे नात्ज़ियों ने यहूदियों के ख़िलाफ़ कानून बनाए। एन ने पाया कि उसे अपनी पसन्दीदा गतिविधियों को करने और अपनी पसन्दीदा जगहों पर जाने की मनाही कर दी गई है।

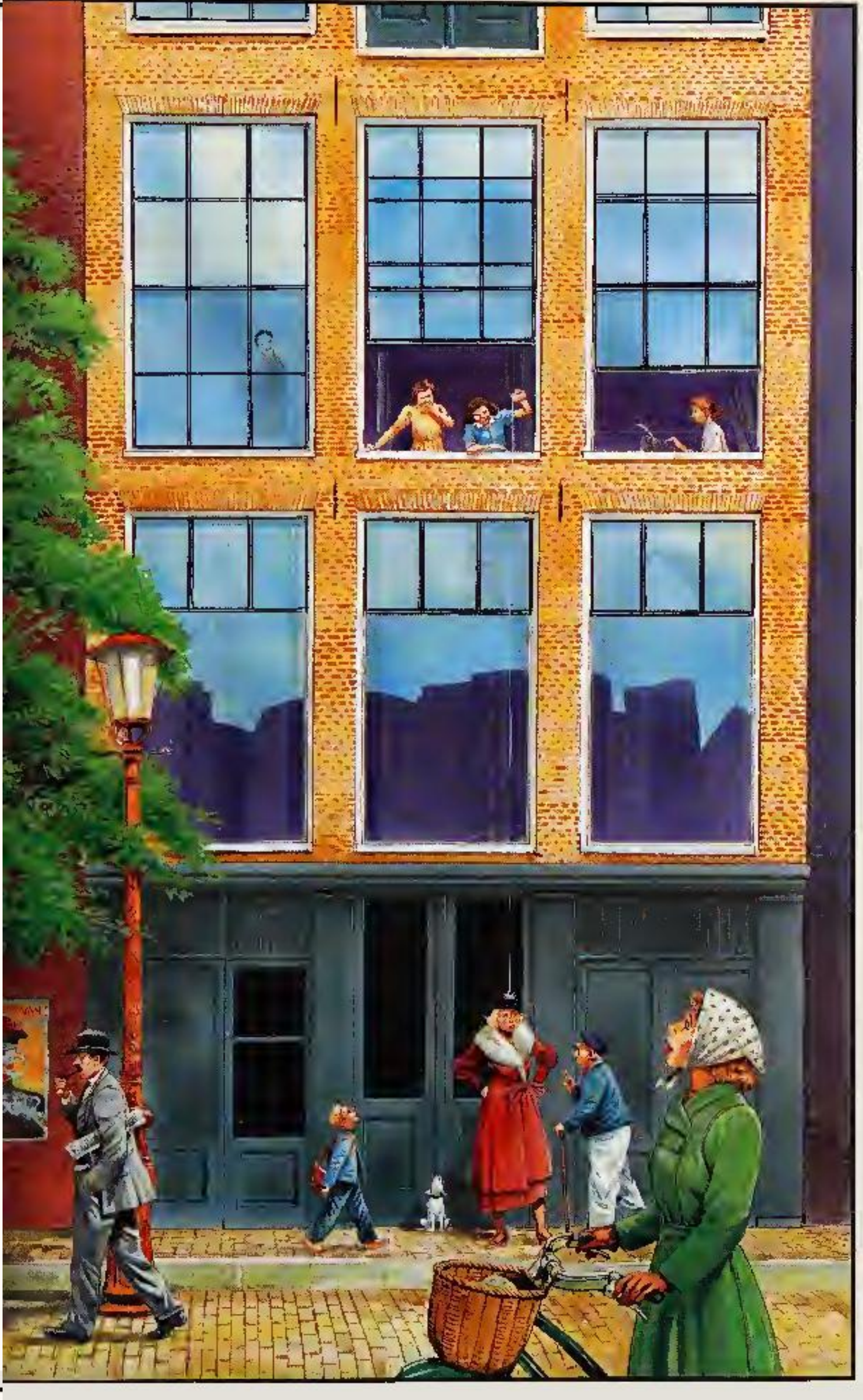

जनवरी 1941 में एक नया कानून लाया गया, जिसके तहत यहूदियों को सिनेमाघरों में घुसने की मनाही कर दी गई। गर्मियों में समुद्र तट पर जाने पर भी पाबन्दी लगा दी गई। एन तब बेहद दुखी हुई जब तरणताल भी यहूदियों के लिए बन्द कर दिए गए।

सितम्बर में एन को अपना स्कूल छोड़ एक यहूदी स्कूल में जाने पर बाध्य किया गया। सभी यहूदी परिवार नए कानून को तोड़ने से डरते थे।

किताबघरों, थियेटरों, संग्रहालयों, कॉफी हाउसों और चिड़ियाघरों में 'यहूदियों का प्रवेश निषिद्ध' की सूचना चस्पां कर दी गईं थीं। यहूदियों को अपनी साइकिलों, मोटर गाड़ियों का इस्तेमाल छोड़ना पड़ा, साथ ही ट्रामों तक में सवारी करने की मनाही कर दी गई। कभी-कभार एन को एक मल्लाह, मौका देख अपनी नाव में चढ़ा लेता था।

"यह डच लोगों की गलती नहीं है कि को इतना बुरा समय झेलना पड़ रहा है," एन ने अपनी डायरी में लिखा।

तब सभी यहूदियों को हुक्म दिया गया कि वे पीले सितारे - छह कोणों वाला डेविड का सितारा, जो यहूदियों का प्रतीक था - पहनें।

**पीले सितारे**

पीले सितारे में काले अक्षरों में यूडे लिखा होता था। इस तमगे का मतलब था कि उसे पहनने वालों से ऐसा बरताव किया जाए जैसा "जात बाहर" लोगों के साथ किया जाता है।

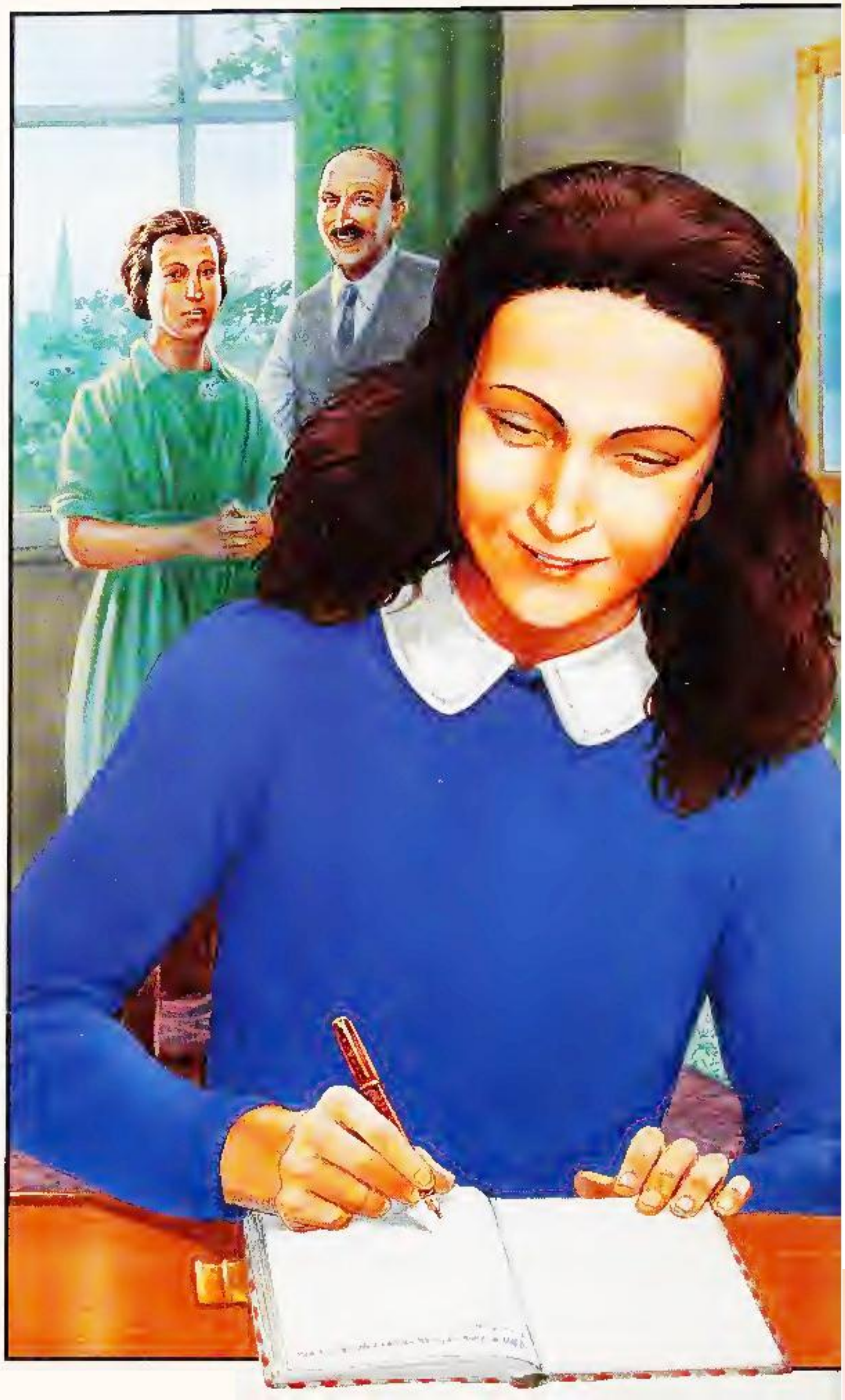

12 जून 1942 को एन की तेरहवीं सालगिरह थी। कठिन समय के बावजूद उसे कई तोहफ़े मिले। ऑटो ने उसे लाल और हल्के हरे चौकोरों वाली डायरी दी, जिस पर धातु से बना ताला भी था। एन ने उसके पहले पन्ने पर लिखाः "उम्मीद करती हूँ कि यह मेरी मदद करेगी और दिलासा देगी।"

इस समय तक नात्ज़ी शासन असहनीय बन चुका था। पर एन ने पाया कि डायरी लिखना उसकी मदद कर रहा था। वह उसे अपनी सहेली मानती थी और उसने अपनी डायरी का एक नाम भी रखा था - "किटी।"

पहले उसने साधारण चीज़ों के बारे में लिखा - गर्म मौसम, उसकी परीक्षाओं के नतीजे, और उन लड़कों के बारे में भी जिन्हें वह पसन्द करती थी। पर 5 जुलाई 1942 की इतवार को जो उसने लिखा वह संजीदा बात थीः "पापा छिपने जाने कह बात कर रहे हैं।"

# ख़ुफिया उप-भवन

जून के अन्त में जर्मनों ने ऐलान किया कि यहूदियों को जर्मनी में बने कार्यशिविरों में भेजा जाएगा।

ऑटो फ्रैंक ने एन से कहा कि वे अपने परिवार को अगुवा कर नहीं ले जाने देंगे।

पिछले कई महीनों से ऑटो अपने दफ्तर के पीछे बने उप-भवन में छिपने की जगह तैयार करवा रहे थे। यह प्रिंसेनखाख़्ट पर स्थित गोदाम के ऊपर था। वे हर सप्ताह अपनी कम्पनी की वैन से मेज़-कुर्सियाँ, गद्दे-चादर, और खाने-पीने का समान धीमे-धीमे पहुँचाते रहे थे।

**एसएस**

एसएस नात्ज़ियों का राजनीतिक पुलिस बल था। उनका काम था यहूदियों और नात्ज़ी विरोधियों को खोज निकालना। लोग एसएस से डरते थे।

5 जुलाई को एक ख़ौफनाक ख़बर मिली। मार्गो के नाम पर दस्तावेज भेजा गया जिसमें उसे एसएस के दफ्तर में हाज़िर होने को कहा गया। वह महज 16 वर्ष की थी। उसे और दूसरे युवा यहूदियों को जर्मनी में बने शिविरों में भेजा जाना था।

फ्रैंक परिवार को फ़ौरन कदम उठाना था। उन्होंने तय किया कि वे अगले ही दिन छिपने चले जाएंगे।

मार्गो उस दिन सुबह जल्दी ही साइकिल से ऑटो की सचिव मीप हीस के साथ निकल गई। अगर वे पकड़े जाते तो दोनों को ज़बरदस्त सज़ा मिलती।

एन और उसके माता-पिता भी जल्द ही आ पहुँचे। एन ने बाद में अपने नए घर का वर्णन किया - उसमें तीन कमरे थे, एक छोटा गुसलखाना, एक पाखाना, एक बड़ा कमरा जिसमें चूल्हा और सिंक था। एक छज्जा भी था।

**एन की बिल्ली**

एन को अपनी बिल्ली की देखभाल अपने पड़ौसियों पर छोड़नी पड़ी। उसने बाद में लिखाः "मूरजे, मेरी बिल्ली ही इकलौती ज़िन्दा चीज़ थी जिसे मैंने अलविदा कहा था।'

*एन के कमरे की दीवार पर उसके पसन्दीदा चित्र*

एन ने अपने और मार्गो के साझा कमरे में फिल्मी सितारों के चित्र लगाए ताकि वह घर जैसा लगे। पर यह घर जल्द ही भीड़-भाड़ वाला हो जाने वाला था - चार और लोग इसी ख़ुफ़िया घर में पनाह लेने वाले थे।

# छिप कर बिताई ज़िन्दगी

13 जुलाई को एक और यहूदी परिवार, हर्मन और ऑगस्टे फॉन पैल्स और उनका बेटा पीटर भी इसी उप-भवन में छिपने आए। चार महीने बाद फ्रित्ज़ फैफर, एक दन्त चिकित्सक, भी आ पहुँचे। अब वहाँ छिपने वाले आठ लोग थे।

दिन के वक़्त नीचे गोदाम में कामगार होते, सो सबको फुसफुसा कर बोलना पड़ता। वे नलके खोलने या पखाने को साफ़ करने के वास्ते पानी बहाने की हिम्मत नहीं कर सकते थे। अगर फर्श, किसीके चलने से चरमराता या किसी के हाथ से कुछ छूट कर गिरता तो गोदाम में काम कर रहे लोगों को यह शक हो सकता था कि वहाँ यहूदी छिपे हुए हैं।

इस तरह जीने से सब आज़िज़ आ चुके थे। एन ने उस वाकये के बारे मे लिखा जब श्री और श्रीमती फॉन पैल्स की आपस में इतनी ज़ोर से बहस हुई कि एन को लगा कि लोगों ने ज़रूर सुन लिया होगा।

कई लोगों ने छिपे हुए लोगों की देखभाल करने और उनकी जानकारी ख़ुफिया रख कर भारी जोख़िम उठाया। क्योंकि जो लोग यहूदियों की मदद करते पाए जाते उनसे एसएस बेहद सख़्ती बरतता था।

गोदाम के मालिक विक्टर कुगलर ने उप-भवन के दरवाज़े को छिपाने के लिए क़िताबों की एक अल्मारी बनवाई थी।

इन परिवारों के लिए खाना खरीदने की कोशिश में मीप गीस हर दिन खुद को जोखिम में डालती रहीं।

''वे हर दिन सब्जियों की तलाश में निकलती हैं,'' एन ने लिखा, ''और तब वे बड़े झोलों के साथ साइकिल से वापस लौटतीं हैं''। मीप खाना ख़रीदने के जाली कूपन भी बनातीं। किस्मत से नात्जी उन्हें कभी पकड़ नहीं पाए।

बैप वाश्कल, दफ्तर में काम करने वाला एक साथी, हर दिन तस्करी कर दूध पहुँचाते, और मार्गो व एन के कपड़े छोटे हो जाने पर नए कपड़ों का इन्तज़ाम भी करते।।

*एन की डायरी के पन्ने और उसका फोटो एल्बम*

यों छिप कर रहना एन को बेहद मुश्किल लगता था। डेढ़ साल बाद एन ने लिखाः "मुझे साइकिल चलाने, नाचने, सीटी बजाने, दुनिया को देखने, खुद को किशोर महसूस करने और यह जानने की ज़बरदस्त इच्छा होती है कि मैं आज़ाद हूँ। पर मैं यह सब नहीं कर सकती।"

एक ऊर्जावान लड़की के लिए बिना बोले, बिना हिले-डुले घंटों बिताना मुश्किल था, और एन अक्सर मुश्किल में फंसती थी।

"मार्गो स्वभाव से ही अच्छी और चतुर है," एन ने लिखा, "पर मुझमें हम दोनों के लिए पर्याप्त ख़ुराफ़ात है।"

पर एन कम से कम अपनी डायरी को तो यह बता सकती थी कि उसे कैसा महसूस होता है। उसने लिखा कि उसे अपने पिता सबसे ज़्यादा प्यारे हैं, क्योंकि वे उसकी मीन-मेख नहीं निकालते, बल्की वे हमेशा उसका बचाव करते हैं। केवल उसकी डायरी को ही यह पता था कि उसने पहले-पहल सोचा था कि पीटर फॉन पैल्स "आलसी और बेवक़ूफ" लड़का है, पर बाद में उसे वह अच्छा लगने लगा। एन ने अपनी उम्मीदों और सपनों का भी बयान किया - कि वह बड़ी होने पर लेखिका बनना और प्रेम में पड़ना चाहती है।

**उप-भवन में पढ़ाई**

छिपने के दौरान एन और मार्गो ने भाषाओं, गणित, भूगोल और इतिहास का अध्ययन किया। उन्होंने क़िताबें पढ़ीं और रेडियो सुना।

# नात्ज़ियों ने धर-पकड़ा

छिपे हुए परिवारों को हमेशा यह डर रहता था कि उन्हें ढूंढ लिया जाएगा। हर खटके-आहट का मतलब ख़तरा था।

अप्रेल 1944 की रात उप-भवन में रह रहे पुरुषों ने नीचे गोदाम में चोरों को घुसते सुना और वे तहकीकात करने नीचे गए।

चोर तो भाग गए, पर दो पडोसियों ने आवाज़ें सुनीं और देखने आए। अब उप-भवन के पुरुषों को भागना पड़ा वे ऊपर दौड़े और क़िताबों की अल्मारी को फुर्ती से बन्द किया।

सबसे बुरा तो यह हुआ कि कि पुलिस ने उप-भवन की तलाशी ली और उस कमरे में भी घुसे जहाँ से उप-भवन का रास्ता था।

एन ने निचले कमरे में पैरों की आहटें सुनीं। एक पुलिस वाले ने तो क़िताबों की नकली अल्मारी को खड़खड़ाया। तब फिर से।

एन ने लिखाः "सब सिहर गए। मैंने कईयों के दाँतों को डर से किटकिटाते सुना, पर किसी ने एक भी लफ्ज़ नहीं बोला।

आख़िरकार आहटें बन्द हुईं।

एन ने आगे लिखाः "हममें से किसीने भी उस रात के पहले ऐसे ख़तरे का सामना नहीं किया था।

पर उप-भवन के बाहर, एमस्टरडाम में कई दुश्मन थे। सबसे ख़तरनाक वे लोग थे जो छिपे हुए यहूदियों के बारे में बातचीत किया करते थे। एसएस ऐसे लोगों को घूस भी देती थी जो छिपे हुए यहूदियों की जानकारी देने को तैयार हों।

दो साल छिप कर रहने के बाद एन को भरोसा हो चला था कि उन्हें जल्द ही बचा लिया जाएगा। 6 जून 1944 के दिन रेडियो ने उत्साहजनक ख़बर दी। मित्र राष्ट्रों की सेनाएं उत्तरी फ्रांस में नॉर्मण्डी के तट पर आ पहुँची थीं।

**डी डे**

6 जून 1944 को डी डे कहा गया। हज़ारों ब्रितानवी और अमरीकी सैनिकों ने नॉर्मण्डी पर हमला किया ताकि उत्तरी फ्रांस को नात्ज़ियों से आज़ाद किया जा सके।

एन ने अपनी डायरी से कहाः ". . . मुझे लगता है दोस्त जल्द ही आने वाले हैं।"

पर मित्र राष्ट्रों की सेना एमस्टरडाम पहुँचती उसके पहले ही आज़ाद होने के एन के सपने बिखर गए।

4 अगस्त 1944 को एक मुखबिर ने गेस्टापो, नात्ज़ियों की ख़ुफिया पुलिस, को बताया कि 263, प्रिंस्टेनखाख़्ट में यहूदियों ने पनाह ली हुई है। यह किसीको पता नहीं कि गेस्टापो को यह ख़बर देने वाला कौन था।

जब पुलिस प्रिंस्टेनखाख़्ट पहुँची उन्हें पहले से पता था कि उन्हें पनाहगारों को कहाँ तलाशना है। उन्होंने विक्टर कुगलर को क़िताबों की अलमारी खोलने पर मजबूर किया जहाँ से उप-भवन का रास्ता था।

पुलिस ने छिपे हुए लोगों को बन्दूक की नोक पर इकट्ठा किया और गिरफ्तार कर लिया। तब उन्होंने उप-भवन की तलाशी ली ताकि पैसे और गहने बरामद कर सकें। उन्होंने उस पुराने ब्रीफकेस को भी खोला जिसमें एन अपनी डायरी रखा करती थी। पर उन्हें ऐसा कुछ नहीं मिला जिसमें उनकी रुचि हो। सो उन्होंने एन की डायरी और दूसरे खुले पन्ने फ़र्श पर पटक दिए।

पुलिस ने बन्दियों को सीढ़ियों से नीचे उतार एक ट्रक में ठूंस दिया। जब वे चले गए मीप गीस ने एन की डायरी और उसके साथ वाले खुले पन्नों को एन के वापस लौटने तक के लिए एक दराज में हिफाज़त से रख दिया।

**एन की डायरी**

1944 तक एन ने जो कुछ लिखा था उससे पिता की दी हुई डायरी, तीन कॉपियाँ और कई खुले पन्ने भर चुके थे।

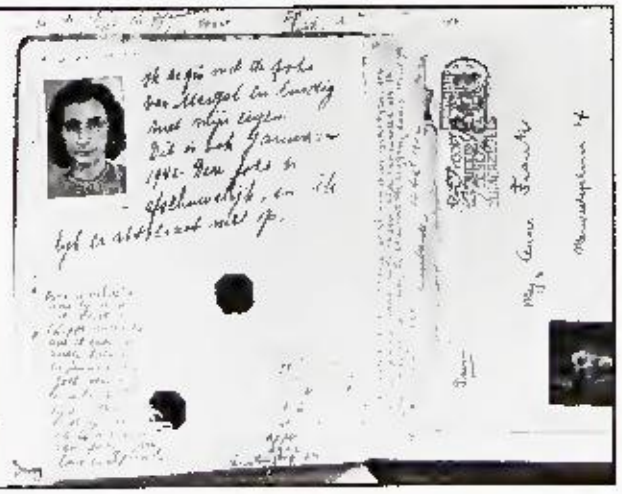

फ्रैंक परिवार और उप-भवन में रह रहे बाकी लोगों को 8 अगस्त 1944 के दिन रेलगाड़ी से जर्मनी की सीमा पर स्थित वैस्टरबौर्क बन्दी शिविर में ले जाया गया।

एन, मार्गो और उनके माता-पिता के बाल छाँट दिए गए और उन्हें बन्दी शिविर की पोशाकें और लकड़ी के जूते पहनने पड़े।

उन्हें उस कारख़ाने में काम पर लगाया गया जिसमें पुरानी बैटरियों को तोड़ा जाता था। काम गन्दा और मुश्किल था, पर दो सालों से भी ज़्यादा घर में बन्द रहने के बाद एन कम से कम कभी-कभार अपने चेहरे पर धूप को महसूस कर सकती थी।

पर तीन सप्ताह बाद ही परिवार को आउश्वित्ज़ बर्केनाउ के यातना शिविर भेज दिया गया, जिसे नात्ज़ियों ने उन लोगों को खत्म करने के लिए बनाया था जिन्हें वे "अवांछनीय" मानते थे। वहाँ सैंकड़ों हज़ार लोगों को मौत के घाट उतारा गया था। फ्रैंक परिवार उस आख़िरी रेलगाड़ी में सवार था, जिसे नीदरलैण्ड से इस भयानक शिविर में ले जाया गया था।

*आउश्वित्ज़ भेजे जा रहे परिवार।*

एन और मार्गो केवल कुछ सप्ताह ही आउश्वित्ज़ में रहीं। तब दोनों लड़कियों को माता-पिता के बिना ही बर्गन-बैल्सन के शिविर में भेज दिया गया - यह भी डरावना शिविर था, गन्दगी और रोगों से भरा।

यहाँ बन्दियों को इतना कम खाना दिया जाता था कि वे भूखों मर रहे थे। सर्दियों का मौसम था और एन व मार्गो के पास पहनने के लिए केवल फटे-चीथड़े ही थे। ठंड में कुड़कुड़ाती लड़कियों को टाइफस रोग हुआ और फरवरी या मार्च 1945 में मार्गो की मौत हो गई। एन अपनी बहन को खो चुकी थी और उसे यह भी लग रहा था कि उसके माता-पिता ज़रूर आउश्वित्ज़ में मारे जा चुके हैं। वह खुद भी बेहद बीमार थी, मार्गो की मौत के कुछ ही दिनों बाद एन भी चल बसी।

दरअसल फ्रैंक परिवार का एक सदस्य बचा हुआ था। जनवरी 1945 में रूसी सैनिक पोलैण्ड पहुँचे थे। जब वे आउश्वित्ज़ पहुँचे उन्होंने वहाँ बचे हुए बन्दियों को रिहा कर दिया।

एन की माँ की मृत्यु शिविर मुक्ति के कुछ सप्ताह पहले ही हो चुकी थी, पर ऑटो ज़िन्दा थे।

*रूसी सैनिक आउश्वित्ज़ के सभी बन्दियों को आज़ाद करते हुए।*

# कहना एन की कहानी को

7 मई 1945 को जर्मनी ने समर्पण किया और दूसरा विश्व युद्ध खत्म हुआ। छह साल चली जंग के बाद दुनिया में फिर से अमन था। ऑटो फ्रैंक एन और मार्गो की तलाश में आर्मस्टरडाम लौटे।

विभिन्न शिविरों में भेजे गए लोगों का क्या हश्र हुआ था यह जानना आसान न था, पर जुलाई 1945 में ऑटो को पता चल गया कि उनकी दोनों ही बेटियों की मौत हो चुकी है। सच तो यह था कि उप-भवन में छिपे सभी लोग मर चुके थे, सिवा ऑटो के।

**मीप गीस**

मीप गीस अब नब्बे पार कर चुकी हैं और अब भी आर्मस्टाडाम में रहती हैं। उन्होंने उप-भवन में छिपे परिवारों के प्रति जो इन्सानियत जताई थी उसके लिए उन्हें कई सम्मानों से नवाज़ा गया।

पर सब कुछ नष्ट नहीं हुआ था। मीप गीस के पास एन की डायरी अब भी थी। उन्होंने वह डायरी ऑटो को दी।

ऑटो ने एन की डायरी बार-बार पढ़ी। अन्त में उन्होंने तय किया कि उनके परिवार की छिप कर बिताई ज़िन्दगी की कहानी सबको पढ़नी चाहिए।

*एन की क़िताब के विभिन्न संस्करणों के मुखपृष्ठ*

ऑटो ने एन की डायरी को एक क़िताब की शक्ल दी, जिसे 1947 में नीदरलैण्ड में प्रकाशित किया गया। उसका कई भाषाओं में अनुवाद किया गया। अमरीका में वह एन फ्रैंकः *अ डायरी ऑफ अ यंग गर्ल* के शीर्षक से 1952 में प्रकाशित हुई।

अब तक इसकी 2 करोड़ 50 लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं। जिस लड़की ने लेखिका बनने का सपना देखा था, वह अब दुनिया के मशहूर लेखकों में एक बन चुकी है और उसके जीवन के बारे में कई नाटक और फिल्में भी बन चुकी हैं।

कई देशों में एन के स्मारक हैं। जब लोग एन के बारे में सोचते हैं, वे उसके विनोदी स्वभाव, भविष्य को लेकर उसकी उम्मीदों और सपनों के बारे में भी सोचते हैं। वे उन तमाम लोगों के बारे में सोचते जिनकी ज़िन्दगियाँ पूर्वाग्रहों और युद्ध से नष्ट हुईं थीं।

*उटरैख्ट में एन फ्रैंक की प्रतिमा*

**एक एनिमेटेड फिल्म**

हाल में एन की कहानी पर एक फ्रांसीसी एनीमेटेड चलचित्र बनाया गया है। इसका शीर्षक है *एन फ्रैंक्स् डायरी*।

*263 प्रिंसेनग्राख़्ट के सामने वाले कार्यालय।*

263 प्रिंस्टेनखाख़्ट के गोदाम के पीछे का उप-भवन आज भी है। उसके कमरे बहुत समय पहले खाली कर दिए गए थे, पर 1960 में उसे एन फ्रैंकस् हाउस नामक संग्रहालय के रूप में खोला गया।

हर वर्ष दुनिया भर से सैंकड़ों हज़ार लोग क़िताबों की अल्मारी के पीछे बनी सीढ़ियों पर चढ़ते हैं। वे उन कमरों में घूमते हैं जहाँ फ्रैंक परिवार और उनके मित्रों ने पनाह ली थी। वे कल्पना करने की कोशिश करते हैं कि दो वर्षों तक वहाँ छिप कर रहना कैसा रहा होगा।

एन के पसन्दीदा चित्र अब भी दीवार पर लगे हैं और वहाँ छिप कर रहे लोगों की कुछ निजी चीज़ें भी दर्शाई गई हैं।

हालांकि एन और उसके परिवार के साथ भयंकर चीज़ें घटीं, एन का विश्वास था कि लोग दुनिया को एक बेहतर जगह बनाएंगे। "सब कुछ के बावजूद," एन ने अपनी डायरी में लिखा था, "मैं अब भी मानती हूँ कि लोग दिल से सचमें अच्छे होते हैं।"

*एन फ्रैंक 1929-1944*